करनाल जिले में सामाजिक संस्थाएँ : परिवर्तन एवं विकास (1966–2001)

प्रवीन कुमार
शोधार्थी
इतिहास विभाग
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र

सारांश :

वर्तमान शोध–पत्र में हरियाणा राज्य के करनाल जिले में सामाजिक संस्थाएँ परिवर्तन एवं विकास (1966–2001) का अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है । जिला करनाल में विभिन्न धर्मों व जातियों के लोग रहते हैं फिर भी उनमें किसी प्रकार का विरोधाभास नहीं है उनमें सभी में एकता व भाईचारे की भावना पाई जाती है । जहाँ संस्कृतिकरण व पश्चिमीकरण ने जाति–व्यवस्था के बन्धन को ढीला किया है वही इनसे भारतीय परम्परागत व्यवस्था संयुक्त परिवार प्रणाली भी धीरे–धीरे शिथिल होती जा रही है । संस्कृतिकरण व पश्चिमीकरण के अलावा संयुक्त परिवार प्रणाली को नगरीकरण, शिक्षा तथा विस्थापित लोगों ने भी प्रभावित किया है । जिससे संयुक्त परिवार के टूटने से, उनका स्थान केन्द्रक परिवार आज भी अपने पुराने संगोत्रीय व रिश्तेदारों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर रहे हैं । जहाँ शहरों में विवाह अब मैरिज ब्यूरो व अखबारों से होते हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्र में आज भी लड़के व लड़की के विवाह में माता–पिता की अपनी भूमिका प्रमुख है । इसके अतिरिक्त जिले में प्रेम विवाह की संख्या भी बढ़ रही है । लेकिन आज भी ग्रामीण क्षेत्र में प्रेम विवाह को समाज के रीति–रिवाजों के विरुद्ध माना जाता है । शहरी क्षेत्रों में इनकी संख्या बढ़ी है जिससे शहरी समाज में जातीय बन्धन ढ़ीले हुए हैं व दहेज प्रथा जैसे सामाजिक बुराई कम हुई है ।

प्राक्कथन :

आदिकाल से भारत में जाति प्रथा का प्रचलन रहा है । जिस तरह पश्चिमी देशों में सामाजिक स्तरीकरण का आधार वर्ग रहा है । उसी तरह भारत में जाति सामाजिक स्तरीकरण का आधार रही है। समाजशास्त्री बी॰एल॰ गुप्ता का मत है कि जाति हिन्दू सामाजिक संरचना का मुख्य आधार है । जिससे हिन्दुओं का सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक जीवन प्रभावित रहा है ।[प]

साहित्यिक स्त्रोतों में जाति का उल्लेख सर्वप्रथम 'ऋग्वेद' में मिलता है । जिसमें तीनों वर्णों का उल्लेख किया गया है । इसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य शामिल हैं । पुरुष–सुक्त में निर्माता के शरीर से चौथे वर्ण की उत्पति का उल्लेख मिलता है । ये वर्ण हैं – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र । पहले इनके लिए 'वर्ण' शब्द का प्रयोग होता था । लेकिन बाद में इनके लिए वर्ग का प्रयोग किया गया । अतः प्रारम्भ में दो वर्ग थे जो बाद में तीन वर्गों में बंट गये और अन्ततः ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र वर्ग बन गये ।[पप]

समाजशास्त्रीय परिपेक्ष्य में समाजशास्त्रीयों ने जाति प्रथा की उत्पत्ति एवं इसके भविष्य में धर्म ग्रन्थों का सहारा लिया है । उनका मानना है कि जातियाँ वर्ण व्यवस्था के भीतर खण्डित इकाईयाँ हैं । जिनकी उत्पत्ति अनुलोम तथा प्रतिलोम विवाह प्रथाओं के परिणास्वरूप हुई है । इन इकाईयों एवं जातियों में वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत एक दूसरे के सम्बन्ध में अपना–अपना दर्जा प्राप्त हुआ है । कालान्तर में जाति सम्बन्धों को क्षेत्र, भाषा और मतों के अन्तर में भी प्रमाणित किया गया है । समाजशास्त्रीयों के अनुसार जाति की उत्पत्ति का उद्देश्य श्रम विभाजन था । जैसे–जैसे लोगों ने चार समूहों अथवा वर्गों के विभाजन स्वीकार किया । वे अधिक कठोर होते चले गए और जाति की सदस्यता और व्यवसाय वंशानुगत हो गये ।[पपप]

जाति शब्द अंग्रेजी भाषा में 'कास्ट' शब्द का हिन्दी अनुवाद है । अंग्रेजी के कास्ट शब्द की उत्पत्ति पुर्तगाली भाषा के 'कास्टा' शब्द से हुई है जिसका अर्थ 'जाति' से लिया जाता है ।[पअ]

जे॰एच॰ हट्टन के अनुसार – जाति एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अन्तर्गत एक समाज अनेक आत्मकेन्द्रित एवं एक–दूसरे से पूर्णतः प्रथम इकाईयों में विभाजित रहता है ।[अ]

उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि जाति एक ऐसा सामाजिक समूह है। जिसकी सदस्यता जन्म पर आधारित होती है और अपने सदस्यों पर खान–पान, विवाह, वेश–भूषा और अनेक प्रतिबंध लागू करती है।[अप]

उद्देश्य और शोध पद्धति :

वर्तमान अध्ययन द्वितीय स्त्रोतों पर आधारित है । हरियाणा सरकार की विभिन्न रिपोर्ट सामाजिक संस्थाओं के लेख, हरियाणा के आर्थिक सर्वेक्षण, समाचार पत्रों, पुस्तकों, लेख आदि से द्वितीयक आंकड़े संग्रहित किये गये हैं और प्राथमिक आंकड़े लोगों के साक्षात्कार के माध्यम से संग्रहित किये गये हैं ।

उद्देश्य :

- करनाल जिले में हुए सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन ।
- करनाल जिले में हुए जनसंख्या परिवर्तन का विश्लेषण ।
- करनाल जिले के लोगों के व्यवसाय पद्धति का अध्ययन ।

करनाल जिले में हरियाणा के अन्य जिलों की तरह लगभग सभी जातियों के लोग रहते हैं । जाति व्यवस्था को हम सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से जिले में पांच भागों में विभक्त कर सकते हैं । जिसे निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है ।[अपप]

तालिका 2.2
जिले में विभिन्न धर्मों में जातियाँ

धर्म	जातियाँ
हिन्दू	रोड़, जाट, गुर्जर, खत्री, सुनार, राजपूत, ब्राह्मण, बनियाँ, कुम्हार, झींवर, रबारी, अरोड़ा, बढ़ई, लौहार, धानक, सासी, चमार, बाल्मिकी, नाई, धौबी
मुस्लिम	अराय, राघड़, ढिम्बा, बिलोच
सिक्ख	अरोड़ा, जाट, खाती, सैनी, झीमर, जुलाहा
जैन	मसबी, छिम्बी, कुम्हार, रामदासी, अग्रवाल तथा जाट
इसाई	रौमन कैथोलिक

मैंने अपने अध्ययन में उन जातियों का अध्ययन करने का प्रयत्य किया है जो जिले में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं ।

कृषक जातियाँ :

जिले में जाट, रोड़ कृषक जातियों में सबसे वरिष्ठ जाति है । अब ये कृषि के साथ–साथ पुलिस तथा अन्य विभागों में भी नौकरी करते हैं।[अपपप]

जाटः

करनाल जिले में सम्पूर्ण जिले में जाट काफी संख्या में बसे हुए हैं। यह जाति बहुत बहादुर व साहसी है । यहाँ के जाट कृषि के कार्य में भी निपुण हैं । गर्मी व सर्दी की परवाह न करते हुए यहाँ के जाट कठिन परिश्रम करते हैं । जाटों में अनेक गोत्र पाए जाते हैं । जैसे अलावत, देशवाल, गहलावत, राठी, सांगवान, हुड्डा । ये लोग ऊँचे दर्जे के गोत्रवादी हैं ।[पग]

राजपूत :

जिले में राजपूत महत्वपूर्ण जाति है । ये खेतीहर हैं । ये सेना में बड़ी संख्या में भर्ती हैं तथा ये अच्छे सैनिक हैं । कृषि कार्य में ये जाटों, से कम निपुण हैं । इसलिए इनकी आर्थिक स्थिति विशेष अच्छी नहीं है ।[ग]

रोड़ः

जाटों के साथ–साथ रोड़ जाति भी अति महत्वपूर्ण जाति है । जो सामाजिक दृष्टि से जाटों जैसी ही है । ये भी कृषि करते हैं तथा भगवान को मानने वाले हैं । इसके अतिरिक्त ये पशु–पालन और दूध व घी का व्यापार भी करते हैं । ये मुख्य रूप से करनाल, कुरुक्षेत्र, कैथल में बसे हुए हैं।[गप]

ब्राह्मण :

कृषक जातियों के बाद सामाजिक व धार्मिक दृष्टि से सभी जातियों में ब्राह्मण जाति को सबसे ऊपर माना जाता है । इस जाति का प्राथमिक कर्त्तव्य धार्मिक समारोहों को शास्त्र पद्धति से सम्पन्न कराना होता है । जो जन्म, विवाह, मृत्यु से सम्बन्धित हैं । इस जाति में अनेक गोत्र पाए जाते हैं । जैसे – भारद्वाज, गौतम, भार्गव, वत्स, वशिष्ठ ।[गपप]

बनियाँ :

बनियाँ एक संस्कृत शब्द 'वाणिज्य' से लिया गया है । जिसका अर्थ व्यापारियों के लिए है । जिले में अधिकतर 'अग्रवाल', 'गुप्ता' बनियें हैं । जो अग्ररोहा (हिसार जिला) से आए हैं । बनियों को गाँवों व शहरों में आर्थिक उद्योगों की रीढ़ माना जाता है । ये व्यापार व वाणिज्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं ।

अन्य जातियाँ :

हिन्दू समाज का चौथा वर्ग शिल्प जातियों का है । इसमें सुनार, कुम्हार, बढ़ई, लौहार, नाई, धौबी, दर्जी हैं । पहले इन जातियों का अपना विशेष कार्य होता था । जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता था और इन्हीं कार्यों के आधार पर ही जाति व्यवस्था बनी हुई थी । जैसे –सुनार का कार्य सोना–चाँदी आदि धातुओं के आभूषण का निर्माण करना होता है । कुम्हार का कार्य मिट्टी के बर्तन का निर्माण करना होता है । इन मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है । बढ़ई का कार्य लकड़ी के सामान बनाने का होता है ।[गपपप]

धौबी कपड़े धोने का कार्य करता है और दर्जी कपड़े सिलने का कार्य करता है । नाई का कार्य परम्परागत कार्य के अतिरिक्त भी होता था । जैसे – नाई ही जन्म व मृत्यु का समाचार उनके सम्बन्धियों के पास ले जाता था और विवाह कराने में तो उसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती थी । वह मध्यस्थता का कार्य करता था ।[गपअ]

इन सब जातियों के बाद समाज में हरिजन का स्थान आता है । जिसमें चमार, धानक, बाल्मिकी आते हैं । ऋग्वैदिक व उत्तर वैदिक काल में इन जातियों के लोगों को अछूत समझा जाता था। क्योंकि समाज में छुआछूत का अत्याधिक प्रचार था । ऊँची जाति के लोग मिथ्या–भिमान के शिकार थे और वे दलितों को हीन समझते थे ।[गअ]

परन्तु वर्तमान समय में हरिजन जाति की स्थिति में परिवर्तन आया है । सरकारी कानूनों व शिक्षा के प्रसार के कारण इन लोगों को अब अछूत नही समझा जाता है और अब इन्होंने अन्य जातियों के साथ शिक्षा संस्थाओं, सरकारी नौकरियों में स्थान प्राप्त करना आरम्भ कर दिया है ।[गअप]

मुस्लिम जातियाँ :

जिले में मुस्लिम आबादी बहुत कम है । हिन्दुओं की तरह इसमें भी अनेक जातियाँ पाई जाती हैं जिसमें– अराय, बलोच, छिम्बा, राँघड़, प्रमुख है । ये हिन्दुओं के साथ विवाह नहीं करते हैं । न ही हिन्दुओं के साथ इनके रीति–रिवाज मेल खाते हैं ।[गअपप]

सिक्ख जातियाँ :

जिले में सिक्ख जाति तीसरी महत्वपूर्ण जाति है । यह समुदाय मुख्य रूप से करनाल क्षेत्र में बसा हुआ है । सिक्खों में भी अनेक जातियाँ पाई जाती हैं । ये हिन्दुओं के रीति–रिवाजों में भाग लेते हैं ।

परिवर्तन एवं विकास :

अध्ययन के दौरान पाया गया है कि नगरों की जनसंख्या में काफी वृद्धि हुई है जिसे निम्न तालिका द्वारा दिखाया गया है ।

तालिका नं॰ 2.3
जिले में नगरों की जनसंख्या में प्रवृत्ति[गअपपप]

नगर/कस्बे का नाम	1961	1971	1981	1991	2001		
					पुरुष	स्त्रियाँ	जोड़
करनाल	72109	92784	132107	176131	117875	103361	221236
असंध	'	'	13209	16749	12090	10617	22707
घरौण्डा	10496	13045	17332	21147	16290	13882	30172
निलोखेड़ी	8035	9357	11078	13911	8599	7806	16405
इन्द्री	'	'	8304	11131	7739	6772	14511
तरावड़ी	'	'	12803	161603	12003	10198	22201
उंचा सिवाना	–	–	–	4860	6882	3728	10610
जोड़	90640	115186	194833	260032	181478	156364	337842

नोट – नगरपालिका असंध, इन्द्री व तरावड़ी 1981 की जनगणना के समय प्रथम बार शहर के रूप में प्रकाश में आई ।

गांव से नगरों की तरफ विस्थापन का मुख्य कारण देहात में रोजगार व आजीविका के साधनों का अभाव पाया गया है ।

1947 में भारत व पाकिस्तान से प्रभावित लाखों लोगों को पाकिस्तान (पश्चिमी पंजाब) से भारत (पूर्वी पंजाब) आना पड़ा और भारत से पाकिस्तान जाना पड़ा । लाखों बेघर हिन्दू व सिक्ख पश्चिमी पंजाब से पूर्वी पंजाब में आए । इन विस्थापितों को स्थापित करने के लिए हरियाणा के अन्य जिलों की तरह करनाल जिले में भी शिविर लगाये गये।

जिनके लिए 1977–78 तक हजारों एकड़ कृषि जमीन विस्थापितों को बसाने के लिए दे डाली। इन विस्थापितों को आर्थिक स्थिति बड़ी खराब थी । इन विस्थापितों को पुनः स्थापित करना एक बड़ी समस्या थी। उन्हें नई जगह व नई परिस्थितियों में स्थापित करना बड़ी कठिन समस्या थी । परन्तु ये लोग मेहनती साहसी व आधुनिक विचारों वाले व्यक्ति थे। विस्थापितों की जितनी जमीन पश्चिमी पंजाब में थी जो उसे जोत रहे थे उसे वैध मान लिया गया और पूर्वी पंजाब में उसी आधार पर उन्हें जमीन आबंटित की गई ।[गपग] इन विस्थापितों ने अपने जीवन की शुरूआत राहत कैम्पों में शुरू की व धीरे–धीरे रोजगार की तलाश करने लगे । इनमें से अधिकतर परिवार एक ही जगह पर रोजगार प्राप्त न कर सके व काम की तलाश में अलग–अलग जगहों में बस गये । इससे स्वतंत्र रहने की भावना को बढ़ावा मिला । इससे संयुक्त परिवार कमजोर होने लगे । बाद में स्थानीय परिवार भी इससे प्रभावित हुए व बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा व कमाई के तरीकों में आए परिवर्तन के कारण उनमें भी स्वतंत्र रहने की भावना बढ़ी ।[गग] मैंने अपने सर्वेक्षण के अध्ययन में पाया कि करनाल जिले में रहने वाले अन्तर्जातीय समुदाय व विभिन्न जातियों के बीच किसी प्रकार का साम्प्रदायिक विरोधाभास नहीं पाया जाता है । वही जातियों के सामाजिक स्तर में काफी परिवर्तन आया है । पहले निम्न जातियों को मुख्यतः हरिजन को हीन दृष्टि से देखा जाता था । लेकिन सामाजिक परिवर्तन होने के कारण यह भेदभाव समाप्त हो चुका है । इनको समाज में अब सम्मान की नजर से देखा जाता है ।[गगप]

करनाल जिले में वर्तमान समय में समाज में जजमानी – व्यवस्था बहुत कम पाई जाती है । शिक्षा के विकास, सरकारी और गैर–सरकारी प्रयत्नों के फलस्वरूप इस व्यवस्था में परिवर्तन आ रहा है। अब इस व्यवस्था को अपनाते हुए जाति को ध्यान में नहीं रखा जाता है । किसी भी जाति का व्यक्ति कोई भी कार्य अपना सकता है । समाज में हुए आधुनिकीकरण से जाति व्यवस्था में लचीलापन आया है। जिससे आज हमारे सामने ऐसे बहुत से उदाहरण हैं जिनसे पता

चलता है कि व्यवसाय चुनते हुए जाति बाधक नहीं है । कोई भी जाति जैसे – ब्राह्मण, नाई, लुहार, चमार आदि जातियों की नई पीढ़ियाँ अपना परम्परागत कार्य छोड़कर अन्य कार्यों में लगी हुई हैं ।[गगपप]

जाति व्यवस्था को शिथिल करने में पश्चिमी विचारों, आधुनिक शिक्षा, आधुनिक परिवर्तित अर्थव्यवस्था, आधुनिक सामाजिक विचारधाराओं ने भी सहयोग दिया है ।[गगपपप]

आधुनिक समय में औद्योगिक विकास होने से भी सभी जातियों के लोग फैक्ट्रीयों व सरकारी कार्यालयों में एक साथ काम करते हैं । एक साथ काम करने से इनके मध्य सामाजिक संबंध स्थापित हो गए हैं ।[गगपअ] कई सामाजिक आन्दोलनों ने भी जाति व्यवस्था के विरुद्ध आवाज उठाई है। जिनमें आर्य समाज प्रमुख है ।[गगअ] भारतीय संविधान भी जाति व्यवस्था को शिथिल करने में सहायक हुआ है । संविधान के अनुच्छेद 17 के आधार पर छुआछूत को समाप्त कर दिया है और 1955 में छुआछूत के विरोध में पास किए गये एक्ट में इसे अपराध माना गया है ।[गगअप]

आधुनिक समाजशास्त्रियों ने जाति व्यवस्था में आने वाले परिवर्तनों के लिए संस्कृतिकरण और पश्चिमीकरण को भी आधार बनाया है । श्री निवास ने सर्वप्रथम संस्कृतिकरण की धारण को सामाजिक जीवन की प्रक्रिया के रूप में अपनी पुस्तक 'रिलिजन एण्ड सोसायटी अमंग दी क्रांस' में बताय गया था।[गगअपप] श्री निवास ने संस्कृतिकरण को परिभाषित करते हुए बताया कि जिसमें छोटी जाति हिन्दू एवं आदिवासी या अन्य समूह अपने रीति–रिवाज, कर्मकाण्ड, विचारधारा और जीवन कृति को ऊँची व द्विज जातियों की दिशा में परिवर्तित कर देते हैं ।[गगअपपप]

श्री निवास ने 'संस्कृतिकरण' के साथ–साथ पश्चिमीकरण नामक धारणा का प्रयोग किया है । एम॰एन॰ श्री निवास के अनुसार पश्चिमीकरण पश्चिमी समाज के सिद्धान्त एवं लक्षण अपनाने की प्रक्रिया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के कुछ तरीकों ने पश्चिमीकरण की प्रक्रिया को तेज कर दिया ।[गगपग] यहां पर पश्चिमीकरण का अन्धाधुँध अनुकरण नहीं किया गया । पश्चिमीकरण के कुछ तत्व यहाँ के समाज द्वारा स्वीकार किये गये और कुछ तत्व अस्वीकार कर दिये गये । स्वीकार किये गये तत्वों ने यहां के समाज में परिवर्तन लाने में काफी सहायता की है ।[गगग] परिवार समाज की एक मौलिक, सार्वभौमिक तथा प्रमुख संस्था है । परिवार के बिना समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है । मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक किसी न किसी परिवार का सदस्य अवश्य रहता है ।[गगगप]

अतः परिवार एक सामाजिक संरचना होती है । जिसकी सदस्यता जन्म से ही मिल जाती है ।

मैकाईवर तथा पेज के अनुसार :

'परिवार निश्चित तौर पर यौन संबंध द्वारा परिभाषित एक ऐसा समूह है जो बच्चे के जन्म तथा पालन–पोषण की व्यवस्था करता है ।[गगगपप]

राम आहुजा ने तीन प्रकार के परिवार बताये हैं :–

1. साधारण 2. मिश्रित 3. संश्लिष्ट

कभी–कभी ऐसा भी होता है कि बच्चे के जन्म के पश्चात् जीवन साथी की मृत्यु हो जाती है तो वह दूसरा पुनः विवाह कर लेता है । ऐसी स्थिति में बच्चों के दो प्रकार के समुच्चयों की इकाई को साधारण परिवार नहीं कहा जा सकता है । राम आहुजा ने ऐसे परिवार को मिश्रित परिवार की संज्ञा दी है । तीसरे प्रकार के संश्लिष्ट परिवार । इन परिवारों में समरेखीय रूप से जुड़े हुए एकांकी परिवार एक साथ रहते हैं । ये परिवार संयुक्त परिवार होते हैं ।[गगगपपप]

डॉ॰ आर॰ जी॰ देसाई के अनुसार :–

'हम संयुक्त परिवार उस परिवार को कहते हैं जिसमें एंकाकी परिवार की अधिक पीढ़ियाँ (तीन या तीन से अधिक) के सदस्य के रूप में एक साथ रहते हैं तथा आय, सम्पत्ति तथा पारम्परिक अधिकारों और दायित्वों के साथ परस्पर सम्बन्ध होते हैं ।[गगगपअ]

जिला करनाल में मुख्य रूप से संयुक्त परिवार प्रथा ही प्रभावपूर्ण रही हैं । आधुनिक समय में बदलती हुई सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों में संयुक्त परिवार प्रणाली अपना महत्व खोती जा रही है । परम्परागत परिवारों के विखण्डन के अनेक कारण उत्तरदायीं हैं । संयुक्त परिवारों को सबसे अधिक नगरीकरण ने प्रभावित किया है । कुछ वर्षों में जिले में शहरी जनसंख्या में तीव्र वृद्धि हो रही है । जिसे निम्न तालिका द्वारा दर्शाया गया है:–

तालिका नं॰ 2.5
जिले में वर्ष 1971 से 2001 में महिला व पुरुष जनसंख्या

वर्ष	कुल जनसंख्या	पुरुष जनसंख्या		महिला जनसंख्या	
		ग्रामीण जनसंख्या	शहरी जनसंख्या	ग्रामीण जनसंख्या	शहरी जनसंख्या
1971	1981303	887292	181306	756912	155793
1981	861241	359448	104241	306960	90592
1991	1035390	420597	134725	359621	120447
2001	1274843	510890	181478	434451	156364

उपरोक्त तालिका में दर्शाया गया है कि 1971 में शहरी जनसंख्या कुल जनसंख्या का 15.80 प्रतिशत तथा 2001 से 20.18 प्रतिशत हो गया।[गगगअ]

नगरीय परिवार नातेदारी समूह से मुक्त होते हैं तथा व्यक्गित रूप से अपनी स्वयं की शैक्षिक, व्यवसायिक, धार्मिक, मनोरंजन सम्बन्धी व राजनैतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में लगे रहते हैं । शहरों में वह अपने परम्परागत व्यवसायों को छोड़कर नए व्यवसाय अपनाते हैं । जिससे उनके विचारों में बड़ा परिवर्तन आया है । शहरों में स्त्रियां को भी नौकरी के अधिक अवसर मिलते हैं । जब वे धन कमाने लगती है । तो वे कई क्षेत्रों में स्वतंत्रता चाहती है । अपने पति के जनक परिवार से मुक्ति चाहती है। इस प्रकार नगरीय जीवन ने संयुक्त परिवार को कमजोर दिया।[गगगअप] आधुनिक शिक्षा ने भी संयुक्त परिवार को कई प्रकार से प्रभावित किया है । जिला करनाल में स्त्री व पुरुष दोनों ही शिक्षा में निरन्तर वृद्धि कर रहे हैं । जिसे निम्न तालिका द्वारा बताया गया है ।[गगगअपप]

तालिका नं॰ 2.6
जिले में महिलाओं व पुरुषों की साक्षरता

वर्ष	साक्षर तथा पढ़े लिखे व्यक्ति			कुल जनसंख्या पर साक्षर तथा शिक्षित व्यक्तियों की प्रतिशत	1000 पुरुषों के प्रति साक्षर पुरुषों की संख्या	1000 स्त्रियों के प्रति साक्षर स्त्रियों की संख्या
	कुल					
	पुरुष	स्त्रियाँ	जोड़			
1981	210394	94817	305211	35.44	470	242
1991	2943382	162937	457319	54.33	651	418
2001	440070	292539	732609	67.74	763	580

पढ़ा लिखा ग्रामीण व शहरी वर्ग संयुक्त परिवार की अपेक्षा केन्द्रक परिवार को प्राथमिकता देता है । शिक्षा लोगों को उन व्यवसायों के लिए तैयार करती है । जो उनके मूल निवास स्थान से नहीं होते हैं इसके कारण उन्हें अपने पैतृक परिवार को छोड़कर दूसरे स्थान पर जाना पड़ता है । जिससे परिवार कई शाखाओं में बंट जाता है । एक व्यक्ति अपनी नौकरी की कमाई को अपने परम्परागत परिवार के सभी सदस्यों पर खर्च करने की अपेक्षा अपनी पत्नी व बच्चों पर खर्च करता है । इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाज में परम्परागत परिवार का विघटन हो रहा है ।[गगगअपपप]

औद्योगिकरण होने से भी संयुक्त परिवारों का विघटन हुआ है । जिले में मुख्यतः लघु उद्योग की स्थापना से लोगों के जीवन को गतिशीलता मिली है । इन उद्योगों की प्रगति के साथ संयुक्त परिवार के अनेक सदस्य गांव छोड़कर काम की तलाश में शहर में आए हैं । जिससे एकांकी परिवार को बढ़ावा मिला है । 2001 के आंकड़ों के आधार पर जिले में पुरुष व महिलाओं की कार्यरत संख्या को निम्न तालिका द्वारा बताया गया है ।[गगगपग]

तालिका नं॰ 2.7

जिले में नौ औद्योगिक श्रेणियों में वर्गीकृत काम करने वालों की जनसंख्या

मुख्य कार्य करने वाले						
वर्ष	कृषक –1			कृषक श्रमिक –2		
1	2 व्यक्ति	3 पुरुष	4 स्त्रियाँ	5 व्यक्ति	6 पुरुष	7 स्त्रियाँ
1981	94108	92762	1346	64296	58364	5932
1991	94411	90938	3473	85575	77280	8295
2001	105132	91139	13993	56780	44824	11956
मुख्य कार्य करने वाले						
वर्ष	पशुधन, वन, मछली, पकड़ने, आखेट, रोपण, फलीधान और संबंध क्रियाओं में लगे हुए ııı – प्ट			गृह उद्योग में – ट (क)		
1	8 व्यक्ति	9 पुरुष	10 स्त्रियाँ	11 व्यक्ति	11 पुरुष	13 स्त्रियाँ
1981	–	–	–	6476	5986	490
1991	2299	2224	75	5324	4762	562
2001	–	–	–	9992	7118	2874

मुख्य कार्य करने वाले						
वर्ष	अन्य सेवा ııı – प्ट			कुल मुख्य कार्य करने वाले		
1	14 व्यक्ति	15 पुरुष	16 स्त्रियाँ	17 व्यक्ति	18 पुरुष	19 स्त्रियाँ
1981	84571	79582	4989	249451	236694	12757
1991	48971	43243	5728	295114	275486	19628
2001	183562	156322	27240	355466	299403	56063

वर्ष	सीमान्त कार्यकर्ता			कार्य न करने वाले			मुख्यकार्य करने वालों की कुल जनसंख्या पर प्रतिशत
1	20 व्यक्ति	21 पुरुष	22 स्त्रियाँ	23 व्यक्ति	24 पुरुष	25 स्त्रियाँ	26
1981	13605	2331	11274	598185	224664	373521	29.71
1991	9152	760	9392	731124	279076	452048	28.50
2001	99989	43511	56478	818728	340454	478274	27.90

इसके अतिरिक्त पश्चिमी पंजाब से आने वाले विस्थापितों के कारण भी परिवार की परम्परागत प्रणाली संयुक्त परिवार का विघटन हुआ । ये विस्थापित लोग स्वतंत्र विचारों वाले व्यक्ति थे । जिसके कारण ये रोजगार की तलाश में अलग–अलग जगहों पर बस गये । जिससे संयुक्त परिवार कमजोर होने लगे । जिससे बाद में इन विस्थापितों का प्रभाव जिले में स्थानीय परिवारों पर पड़ा और वे रोजगार की तलाश में अपने परिवार से अलग रहने लगे । जिससे भारतीय समाज की परम्परागत प्रणाली संयुक्त परिवार का विघटन हुआ ।[गस]

जिले में किए गए सर्वेक्षण से सिद्ध होता है कि वर्तमान समय में केन्द्रक परिवारों की संख्या में बढ़ौतरी हुई है ।

परिवार के निर्माण के लिए 'विवाह' एक महत्वपूर्ण संस्था है । विवाह स्त्री व पुरुष को पारिवारिक जीवन में प्रवेश करने के लिए सामाजिक मान्यता देता है । विवाह परिवार संस्था का एक मुख्य अंश आधार है । पति–पत्नी की संख्या के आधार पर विवाह दो प्रकार के होते हैं :–

1. एक विवाह 2. बहु विवाह

बहु विवाह चार प्रकार के होते हैं – बहु पत्नी विवाह, बहु पति विवाह द्वि–पत्नी विवाह, समूह विवाह।[गसप]

जिला करनाल में मुख्य रूप से हिन्दु व सिक्ख परिवारों में एक विवाह की प्रथा पाई जाती है। बहु विवाह हिन्दू व सिक्ख परिवारों में समाप्ति की ओर है । इसका मुख्य कारण यह है कि आज की बढ़ती हुई महंगाई में दो पत्नियों को एक साथ रखना सम्भव नहीं है । इसके अतिरिक्त कानून के अनुसार भी सरकारी कर्मचारी दो पत्नियाँ नहीं रख सकता । इसके अतिरिक्त इसाई व जैन के लोगों में भी मुख्यतः एक विवाह देखने को मिलता है ।[गसपप]

वर्तमान समय में वर ढूंढ़ने के लिए अखबारी विज्ञापनों तथा मेरिज ब्यूरो की भी सहायता ली जाती है । परन्तु इस भूमिका को शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित कर सकते हैं । गांवों में आज भी अधिकतर विवाह परम्परागत तरीकों से तय किऐ जाते हैं ।[गसपपप]

इसके अतिरिक्त करनाल जिले में वर्तमान समय में प्रेम विवाह की संख्या बढ़ी है । ये विवाह अर्न्तजातीय और संगोत्र हो सकते हैं । मैंने अपने सर्वेक्षण के अध्ययन में पाया है कि 1960–70 के आस–पास समाज पुरानी रीति–रिवाजों व परम्पराओं से बंधा हुआ था । क्योंकि अर्न्तजातीय व संगोत्र विवाहों को सामाजिक परम्पराओं के विरुद्ध माना जाता था । लेकिन आधुनिकता व शिक्षा के विकास के कारण सामाजिक परिवर्तन आया और अर्न्तजातीय विवाहों को बढ़ावा मिला । 1990 के दशक के बाद इस प्रकार के विवाहों का प्रचलन ज्यादा देखने को मिलता है । ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी अर्न्तजातीय विवाहों को समाज के विपरीत माना जाता है । क्योंकि रीति–रिवाजों के अनुसार गांवों में लड़का–लड़की को अपास में भाई–बहन माना जाता है । यदि कोई लड़का–लड़की शादी कर भी लेता है तो उसे पंचायत द्वारा बिरादरी से बष्किृत या गांव से निकाल दिया जाता है । वहीं शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा खुलापन नजर आता है । शहरी क्षेत्रों में इन विवाहों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती जा रही है । जिससे शहरी क्षेत्रों में जातीय बन्धन ढीले हुए है तथा दहेज प्रथा जैसी बुराई भी कम हुई है ।[गसपअ]

वर्तमान में बाल विवाह में भी परिवर्तन आया है । प्राचीन समय में बाल विवाह का प्रचलन था । परन्तु 1930, 1978 के बाल विवाह निषेध अधिनियम के बाद विवाह के लिए आयु में विशेष वृद्धि हुई है । जिला करनाल में अधिकतर जातियों में बाल–विवाह प्रचलित नहीं है । स्त्री शिक्षा व कानूनी मान्यता ने बाल विवाह को काफी कम कर दिया है ।[गसअ]

विवाह का परम्परागत रूप बदल रहा है । उसमें अनेक परिवर्तन आ रहे हैं । इन सभी में आने वाले परिवर्तनों के अतिरिक्त आज आधुनिक समाज में वैवाहिक सम्बन्धों में एक नई समस्या पैदा हो गई है वह है –'तलाक' ।

सभी विवाह सफल नहीं हो सकते । कुछ असमजंस्य व कटुता के कारण समाप्त होते हैं । कुछ असफल विवाह वाले व्यक्ति इसे अपना भाग्य समझकर अपना जीवन व्यतीत कर लेते हैं । कुछ आशावादी लोग अपने को पुनः समायोजन करने की कोशिश करते हैं । लेकिन कुछ लोग तनाव को सहन नहीं कर पाते और विवाह बन्धन को तोड़ देते हैं ।[गसअप]

मेरे अध्ययन काल में आरम्भ में तलाक को बुरा समझा जाता था। परन्तु वर्तमान समय में विवाह विच्छेद के प्रति लोगों के दृष्टिकोण का पता लगाने के लिए समाज शास्त्रीय अध्ययन किये गए । आज तलाक का महत्व पढ़े–लिखे पहचानने लगे हैं । कुछ पढ़े–लिखे लोग अपनी विवाहित जिन्दगी से खुश नहीं होते और वे तलाक चाहते हैं ।[गसअपप] करनाल जिले में किये गये साक्षात्कारों से पता चलता है कि ग्रामीण व कम शिक्षित वर्ग के लोग आज भी तलाक को बुरा मानते हैं । निम्न वर्ग

की महिलाओं का मानना है कि एक पत्नी को अपने पति से कभी तलाक नहीं लेना चाहिए । चाहे उस कि कितने अत्याचार हो । परन्तु तलाक के लिए पढ़े–लिखे लोगों का दृष्टिकोण बदल रहा है । उनका मानना है कि तलाक को रोकने के प्रयास तो अवश्य करना चाहिए । परन्तु परिस्थितियाँ अधिक जटिल हो जायें तो व्यक्तित्व विघटन से व्यक्ति को बचाने के लिए तलाक में ही भलाई है ।[गसअपपप]

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मेरे अध्ययन काल में जिला करनाल में विभिन्न धर्मों व जातियों के लोग रहते हैं फिर भी उनमें किसी प्रकार का विरोधाभास नहीं है उनमें सभी में एकता व भाईचारे की भावना पाई जाती है ।

निष्कर्ष :

जहाँ संस्कृतिकरण व पश्चिमीकरण ने जाति–व्यवस्था के बन्धन को ढीला किया है वही इनसे भारतीय परम्परागत व्यवस्था संयुक्त परिवार प्रणाली भी धीरे–धीरे शिथिल होती जा रही है । संस्कृतिकरण व पश्चिमीकरण के अलावा संयुक्त परिवार प्रणाली को नगरीकरण, शिक्षा तथा विस्थापित लोगों ने भी प्रभावित किया है । जिससे संयुक्त परिवार के टुटने से उनका स्थान केन्द्रक परिवार आज भी अपने पुराने संगोत्रीय व रिश्तेदारों के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह कर रहे हैं । जिससे शहरों में विवाह अब मैरिज ब्यूरो व अखबारों से होते हैं । वहीं ग्रामीण क्षेत्र में आज भी लड़के व लड़की के माता–पिता की भूमिका प्रमुख है । इसके अतिरिक्त जिले में प्रेम विवाह की संख्या बढ़ रही है । लेकिन आज भी ग्रामीण क्षेत्र में प्रेम विवाह को समाज के रीति–रिवाजों के विरुद्ध माना जाता है । वहीं शहरी क्षेत्रों में इनकी संख्या बढ़ी है जिससे शहरी समाज में जातीय बन्धन ढ़ीले हुए हैं व दहेज प्रथा जैसे सामाजिक बुराई कम हुई है ।

प. बी॰एल॰गुप्ता, समाजशास्त्र, पृ॰ 548
पप. एम॰एन॰ श्री निवास, इण्डियन सोशल स्ट्रक्चर, पृ॰ 3
पपप. राम आहुजा, इण्डियन सोशल सिस्टम, पृ॰202
पअ. जे॰एच॰हट्टन, कास्ट इन इण्डिया, पृ॰ 47
अ. जे॰एच॰हट्टन, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 50
अप. उपरोक्त
अपप. जिला करनाल गजेटियर, 1988, पृ॰ 67
अपपप. उपरोक्त, पृ॰ 111
पग. हुक्म सिंह, जाटों का इतिहास, भाग–1, पृ॰ 23–24
ग. के॰सी॰ यादव, हरियाणा का इतिहास, पृ॰ 12
गप. जिला करनाल, गजेटियर, 1988, पृ॰ 103
गपप. के॰सी॰ यादव, पूर्वउद्धृत, पृ॰ 12
गपपप. के॰सी॰ यादव, हरियाणा– इतिहास एवं संस्कृति, भाग–2, पृ॰ 37
गपअ. उपरोक्त, पृ॰ 38
गअ. के॰ सी॰ यादव, हरियाणा–इतिहास एवं संस्कृति, भाग–2, पृ॰ 39
गअप. साक्षात्कार पर आधारित, रोहताश, चमड़े का कार्य (21.7.2016)
गअपप. साक्षात्कार पर आधारित, मोहम्मद, किसान (21.7.2016)
गअपपप. सांख्यिकीय सारांश, हरियाणा, 2001, पृ॰ 29
गपग. जिला करनाल गजेटियर, 1971, पृ॰78
गग. के॰सी॰ यादव, हरियाणा का इतिहास, भाग–3, पृ॰ 48
गगप. साक्षात्कार पर आधारित, रतन सिंह, फौजी रिटायर्ड (20.7.2016)
गगपप. साक्षात्कार पर आधारित, जगत, नाई (20.7.16)
गगपपप. बी॰एस॰ सैनी, दी सोशल एण्ड इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ पंजाब, पृ॰ 52
गगपअ. बी॰एस॰ सैनी, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 55
गगअ. बी॰एस॰ सैनी, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 56
गगअप. एल॰पी॰ शर्मा, हिस्ट्री ऑफ एन्सेट इण्डिया, पृ॰ 61
गगअपप. बी॰ कुप्पुस्वामी, सोशल चेंज इन इण्डिया, पृ॰ 49
गगअपपप. एम॰ एन॰ श्रीवास्तव, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 46
गगपग. एम॰एन॰ श्रीनिवास, पूर्व उद्धृत, पृ॰ 46
गगग. रघुवीर सिंह, सोशल चेज इन इण्डिया, पृ॰ 955
गगगप. डेविड जी, मंडेल बाम, सोसाइटी इन इण्डिया, पृ॰33

गगगपप. मेकाइवर तथा पेज, सोसाइटी, पृ॰ 238
गगगपपप. राम आहुजा, पूर्व उर्द्धत, पृ॰ 21
गगगपअ. आर॰जी॰ देसाई, दी ज्वांईट फैमली इन इण्डिया एन एनालाईस, भाग–5, पृ॰ 48
गगगअ. भारत की जनगणना 2001, पृ॰58
गगगअप. राम आहुजा, पूर्व उर्द्धत, पृ॰ 58
गगगअपप. भारत की जनगणना, 2001, भाग–8, पृ॰ 70
गगगअपपप. बी॰एस॰ सैनी, पूर्व उर्द्धत, पृ॰ 60
गगगपग. रोजगार विभाग, करनाल
गस. जिल करनाल गजेटियर, 1988, पृ॰ 83
गसप. राम अहुजा, पूर्व उर्द्धत, पृ॰ 108
गसपप. गिरजा खन्ना, ए॰वी॰ मरिअम्मा, इण्डियन वूमॅन टूडे, पृ॰ 11
गसपपप. साक्षात्कार पर आधारित, सुमित्र शर्मा, अध्यापिका (27.7.2016)
गसपअ. साक्षात्कार पर आधारित, सुमित्रा शर्मा, अध्यापिका (27.7.2016)
गसअ. जिला करनाल, गजेटियर, 1988, पृ॰ 68
गसअप. राम आहूजा, पूर्व उर्द्ध, पृ॰ 155
गसअपप. ए॰के॰ सिन्हा, सोशल इन्स्टिट्यूशन इन इण्डिया, पृ॰ 124
गसअपपप. साक्षात्कार पर आधारित, ओमप्रकाश, प्राध्यापक (28.7.2016)